प्रकृति के पांचों तत्वों द्वारा वन्डरफुल स्वागत

(ओम् शान्ति रिट्रीट सेन्टर (दिल्ली) के प्रथम फेज़ के उद्घाटन अवसर पर)

आज के दिन चारों ओर से देश और विदेश से सभी विशेष आत्मायें इस फाउण्डेशन सेरीमनी के लिए आये हैं। उद्घाटन तो आप सबने किया लेकिन बाबा ने भी आज वतन में आप सभी का बहुत-बहुत विचित्र रूप से स्वागत किया, जो अभी तक हुआ नहीं है। जैसे ही हम वतन में पहुँची तो दूर से ही बाबा तो मुझे नहीं दिखाई दिया लेकिन एक बहुत वण्डरफुल सीन हमारे सामने आई। थोड़ा हम आगे बढ़े तो बहुत विचित्र शहनाई सुनने में आई और

उस शहनाई के बीच में प्रकृति के यह पांच तत्व बहुत सुन्दर रूप से स्वागत कर रहे थे। आप कहेंगे प्रकृति कैसे स्वागत करेगी! वह भी एक वण्डरफुल सीन थी। आज की यह सारी सभा वतन में इमर्ज थी, तो पहले हमने देखा - आकाश दिखाई दिया और उस आकाश से हम सबके ऊपर बहुत सुन्दर फूलों की वर्षा हो रही थी। तो आकाश, प्रकृति हमारा यह स्वागत कर रही थी। फिर आया वायु, वायु ऐसे चल रही थी जो चारों ओर के भिन्न-भिन्न वृक्ष के पत्तों की टालियां ऐसे हिल रही थी, हवा से टाल-टालियां ऐसे झूम रही थी, जो ऐसे सुन्दर साज़ निकल रहे थे, जो अभी तक तो हमने नहीं सुने हैं। तो भिन्न-भिन्न साजों से वायु हमारा स्वागत कर रही थी। और तीसरा नम्बर - अग्नि ने स्वागत किया। अग्नि तो वैसे जलाने का काम करती है, लेकिन क्या देखा कि एक सेकण्ड में अनेक प्रकार की मीठी चीज़ें, नमकीन चीज़ें, भोजन की चीज़ों के थाल हम सबके सामने ऐसे घूम रहे थे, जैसे चक्र होता है ना। ऐसे अग्नि ने हम सबका भोजन से स्वागत किया।

फिर जल ने स्वागत की। जैसे हम यहाँ स्लोगन वरदान रूप में देते हैं, इसी प्रकार से वहाँ बहुत सुन्दर चमकीले स्लोगन थे, जो सागर से ऐसे सुन्दर स्लोगन की थालियां निकली और भिन्न-भिन्न प्रकार के सुन्दर सजे हुए स्लोगन सबको मिलते गये। ऐसे सागर ने सभी की स्वागत की, उसके बाद पृथ्वी जैसे हम सबका आह्वान कर रही थी। आइये फरिश्ते, पधारिये, स्वागत है, स्वागत है.... तो यह पांच प्रकार से प्रकृति ने हम सबका स्वागत किया, ऐसे स्वागत कराते सभी आगे चलते गये फिर बाबा सामने दिखाई दिया। वह सीन भी बड़ी न्यारी थी।

हमने देखा कि बाबा ने इन दो दादियों (दादी जी और दादी जानकी जी) को इमर्ज किया। इन दादियों के हाथ में बहुत सुन्दर मणियां थी। ऐसी मणियां पहले हमने नहीं देखी है। बहुत सुन्दर मणियों के हार इन दोनों दादियों के हाथ में थे और उस एक-एक मणी में हम सब बच्चों की याद-प्यार समाई हुई थी। दोनों दादियों ने हम सबके याद-प्यार की माला बाबा को पहनाई। माला

पहनाने के बाद यह दोनों ही दादियाँ बाबा के दोनों तरफ ऐसे खड़ी हो गई, जो इनका शरीर नहीं दिखाई दे रहा था, सिर्फ फेस दिखाई दे रहे थे। बीच में ब्रह्मा बाबा का और दोनों तरफ दोनों दादियों का। यह तीन फेस ऐसे लगे जैसे त्रिमूर्ति ब्रह्मा गाया हुआ है। तो सभी बच्चों को बाबा ने कहा देखो यह त्रिमूर्ति ब्रह्मा है। तो यह त्रिमूर्ति ब्रह्मा के रूप में बहुत सुन्दर सीन दिखाई दे रही थी। यह सीन आप भी अपने सामने इमर्ज करो।

उसके बाद बाबा ने सभी प्रान्तों वा देशों से आये हुए भाई-बहनों को इमर्ज किया। और उनको खास ऐसे वरदान का हाथ देकर कहा बच्चे, बहुत अच्छा किया जो आप सभी इस रूहानी खेत में रूहानी वायब्रेशन का बीज डालने के लिए आये। यह भी रूहानी वायब्रेशन की सीड सेरीमनी हो गई। तो बाबा ने कहा देखो, मुख्य सब सेन्टर्स की टीचर्स और मुख्य भाई सब इकट्ठे हुए हैं। प्रबन्ध भी थोड़ा नीचे-ऊपर मिला है फिर भी सब पहुँच गये हैं। तो बाबा ने कहा भले कुछ भी है लेकिन मैं यह देख रहा हूँ, दादी ने बुलावा किया कि दिल्ली हमारी राजधानी है, आप सब पहुँच जाओ। और सभी देशों से, यहाँ-वहाँ से पहुँच गये हैं, इसकी मुबारक हो। यह संगठन की शक्ति क्या नहीं कर सकती है। संगठन के शक्ति की कमाल तो जानते ही हो। ऐसे कहते बाबा ने दिल्ली वालों को भी खास याद दी और कहा दिल्ली वालों की भी कमाल है। दिल्ली तो बाबा की दिल है, देखो वैसे तो शिव बाबा को गिफ्ट दी जाती है लेकिन बाबा ने दिल्ली वालों को गिफ्ट दी है, तो कमाल है दिल्ली वालों की भी जो बाबा ने दिल्ली को सौगात दी है। जन्म-जन्म तो भगवान को सौगात दी लेकिन इस बारी भगवान ने आप सबको सेवा के लिए यह सौगात दी है। तो एक-एक बच्चे को कहना कि बाबा ने आप सबका नाम लेकर, विशेष याद दी है। जैसे बाबा के सामने सभी बच्चे इमर्ज थे और बाबा एक-एक को नाम से याद और प्यार बहुत-बहुत दिल से दे रहे हैं। ऐसे याद-प्यार देते बाबा बोले, बच्चों से यही संकल्प कराना कि हर एक को अपने रूहानी वायब्रेशन फैला करके दिल्ली द्वारा विश्व में बाप को

प्रत्यक्ष करना ही है। तो सभी इस सभा में यही संकल्प करो।